

अडानी के महा-घोटालों की जांच करो

क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा

‘एक राजा था। उसकी जान एक तोते में बंधी थी। तोते की टांग टूटी, तो राजा की भी टूट जाई..’, बचपन में दादियों से हम सभी ने ये किस्से सुने हैं। पिछले एक साल में अडानी के काले कारनामों के जो काले चिढ़े उजागर हुए हैं, और उनके अखबारों की सुर्खियां बनते ही जिस तरह मोदी सरकार, अडानी से ज्यादा बेचत हुई है उससे साक्षित होता है कि मोदी सरकार की जान, वाकई अडानी समूह के साथ बंधी हुई है। इसी साल 24 जनवरी को प्रकाशित हुई ‘हिंडेनबर्ग रिपोर्ट’ ने अडानी समूह के घोटालों को नंगा कर दिया था। साक्षित कर दिया था कि अडानी-बंधुओं का पूंजी का काला साम्राज्य किस क़दर नंगाई से पहले, गुजरात राज्य सरकार और बाद में केंद्र की मोदी सरकार की मिलीभागत, संरक्षण, प्रोत्साहन, बे-ईमानीपूर्ण लिप्तता के सहारे खड़ा हुआ है। क्रिकेट के खेल में जैसे अंतिम ‘स्लॉग ओवर्स’ में ये जानकर कि मैच तो अब ख़त्म होने वाला है, जिनने बटोर सकें उतने रस बटोर लिए जाएं बल्लेबाज् अंधाधुंध बल्ला धुमाता है; बिलकुल उसी तरह पूंजीवाद के ये अंतिम ओवर हैं, जिनमें बॉलर और अंपायर की मिलीभागत से अडानी भअंधाग बल्लेबाजी कर रहा है।

‘हिंडनबर्ग रिपोर्ट’ ने अडानी के काले कारनामों की सच्चाई तो अकाटय तरीके से उत्तराधार कर दी थी जिसके परिणामस्वरूप उसके शेयर भरभराकर गिरे थे, लेकिन उस रिपोर्ट में सबूत प्रस्तुत नहीं किए गए थे। ‘आपको सबूत चाहिएं तो अदालत में हमारे खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर करें, सबूत हम अदालत में ही प्रस्तुत करेंगे’, यह कहा गया था।¹ आर्गानाइज्ड क्राइम एंड कररशन रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट (ओसीआरपी), दुनियाभर के 100 प्रतिष्ठित पत्रकारों का एक साझा मंच है, जो दुनियाभर के सामाज्यवादी लुटेरों द्वारा किए जा रहे घोटालों की जांच करता है। उनकी सभी खोजी रिपोर्टें, तथ्यों, सबूतों पर आधारित होती हैं, इसलिए विश्वसनीय होती हैं। दुनिया के नामचीन अखबार जैसे गार्डियन, फाइनेंसियल टाइम्स, वाशिंगटन पोस्ट आदि उनकी रिपोर्ट को खरीदकर छापते हैं। दुनियाभर के शेयर बाजार उनसे प्रभावित होते हैं।

ओसीसीआरपी की 31 अगस्त की रिपोर्ट के अनुसार, "दो व्यक्तियों, संयुक्त अरब अमीरात के नासिर अली शाहबान अली तथा ताइवान के चांग चुंग लिंग, गौतम अडानी और मारीशस के नागरिक, उनके बड़े भाई विनोद अडानी के काले कारोबार में लम्बे समय से साझेदार तथा उनकी अनेक कंपनियों में डायरेक्टर रहे हैं। यह गिरोह, मारीशस फण्ड/बरमूडा फण्ड नाम की बेनामी कंपनियों के माध्यम से, लम्बे समय तक, अडानी समूह की कंपनियों के शेयर खरीदकर, उनके दाम बढ़ाने का फर्जीवाड़ा करता रहा है। इस फर्जीवाड़े से बेशुमार मुनाफा कूटा गया है। इस गोरखधंधे की 'सलाहकार', विनोद अडानी की कंपनी है, जो अपनी 'बहुमूल्य सलाह' द्वारा मनमाना धन लूटती आई है। इतना ही नहीं, नासिर अली शाहबान अली तथा ताइवान के चांग चुंग लिंग के मालिकाने की बेशुमार दौलत वाली कंपनियों का काम खुद विनोद अडानी के कर्मचारी देखते हैं इसलिए यह कहना मुश्किल है कि इस विशाल धन का असली मालिक कौन है, कौन किसके लिए काम कर रहा है।"

ओसीसीआरपी रिपोर्ट बताती है, "सेवी एक्ट 1992 के अनुसार, किसी भी सूचीबद्ध कंपनी के कुल शेयर का कम से कम 25 प्रतिशत पब्लिक को खरीदने के लिए उपलब्ध रहना ज़रूरी है, लेकिन अडानी कंपनियों में जाने कितनी बार यह 10 प्रतिशत से भी नीचे रहा है। मतलब कंपनी के मालिकों और उनके

लगए-भगुओं ने ही सरे शेयर खरीद लिए जिसके परिणामस्वरूप अडानी के शेयर पिछले 5 सालों में 1000 प्रतिशत तक बढ़े।”
फाइनेंशियल टाइम्स उसी रिपोर्ट के आधार पर आगे लिखता है कि भारत में शेयर बाजार सम्बन्धी सरकारी निगरानी व्यवस्था ठप पड़ चुकी है। उनका इशारा 2011 से 2017 तक सेवी के चेयरमैन रहे यू. के सिन्हा की ओर है, जिहोंने अडानी को क्लीन चिट देकर सेवी की चेयरमैनी छोड़ दी और अडानी की कंपनी एनडीटीवी में डायरेक्टर बन गए। मतलब, सेवी में अडानी के अप्रत्यक्ष नौकर होने के बजाए प्रत्यक्ष नौकर बन गए!! अडानी ने एक बयान जारी कर कहा कि यूके सिन्हा की ‘निष्ठा’ बेदाग है, उसपर उंगली नहीं उठाई जा सकती!! उन पर क्या, अडानी के दरबार में जो भी है, मनुष्य या जानवर सब के सब हीरे हैं किसी की भी निष्ठा पर प्रश्नचिन्ह नहीं!! उंगली उठाकर कौन तुड़वाएगा भला अपनी उंगली!!!

रिपोर्ट ने आगे यूके सिन्हा की निष्ठा का खुलासा भी किया है। जनवरी 2014 में, अर्थात मोदी-काल वाली 'असरती आज़ादी' मिलने से महज 3 महीने पहले दो सरकारी एजेंसियां, अडानी के शेयर बाजार घोटालों की जांच कर रही थीं। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने सेवी को लिखा कि वे अडानी के शेयर फर्जीवाड़ी की जांच कर रहे हैं। पत्र के साथ एक सीढ़ी भी भेजी गई थी जिसमें अडानी के पॉवर प्रोजेक्ट्स के लिए मंजूर कर्ज की रकम को शेयर बाजार की ओर मोड़कर उसे शेयर हराफेरी में इस्तेमाल होने की प्रक्रिया को सबूत मौजूद थे। मई 2014 में मतलब 'अमृतकाल' आने से बस चंद रोज पहले राजस्व खुफिया निदेशालय ने अडानी से बस्ती का एक नोटिस भी सेवी को भेजा था। मोदी राज आने के बाद वह जांच यूके सिन्हा ने संभाल ली और 3 साल में वह जांच पूरी कर अडानी को बेक्सर पाया!! निष्ठा हो तो यूके सिन्हा जैसी!! कुछ लोग खामखां अडानी द्वारा अपन नया-कोरा हवाई जहाज तेल समेत मोदी जी को 2014 के लोक सभा चुनाव प्रचार के लिए दिए जाने पर सवाल उठाते हैं!! मोदी जी के चुनाव जीतने पर अडानी का सब कुछ दांव पर लगा था!!

पूँजीवाड़ा का जलवा देखिए कि 31 अगस्त को ठोस लिखित दस्तावेज़ी सबूतों के साथ आई ऐसी जानलेवा रिपोर्ट के बाद भी अडानी के शेयर मात्र 2 फीसदी गिरे बल्कि एसीसी का शेयर तो उसके बाद भी बढ़ा था!! अडानी के दोस्तों, ताबेदारों के हाथ कितने लंबे-चौड़े हैं शेयर बाजार को अच्छी तरह मालूम है!! ‘हिंडेनबर्ग रिपोर्ट’ आने के बाद से ही अडानी फर्जीवाड़े की जांच के आदेश सुप्रीम कोर्ट ने दिए हैं। वह मामला अपनी अदालती गति से चल रहा है और जब तक अडानी चाहेगा, यूं ही अनंत काल तक चलता रहेगा या खुद अपनी मौत मर जाएगा। अडानी को 31 अगस्त वाली रिपोर्ट के आने की भनक लग गई थी। सेबी और अडानी मतलब दो जिसमें एक जान!! इसीलिए सेबी ने सुप्रीम कोर्ट में अंतरिम रिपोर्ट दाखिल की थी। अडानी ने ‘हिंडेनबर्ग रिपोर्ट’ को देश पर हमला बताया था और उनकी इस घोषणा के बाद भाजपा की ट्रोल आर्मी उसे देश पर हमला बताने में ही पिल पड़ी थी। ओसीसीआरपी की इस रिपोर्ट को उसने पहली रिपोर्ट का नया संस्करण और बकवास बताया है।

अडानी के विदेश साझेदारों का तारुफ़

नासिर अली शहबान अली: 2007 में, राजस्व खुफिया निदेशालय ने गौतम अडानी के अवैध हीरा व्यापर की जांच की थी। उस फर्जीवाड़े में भी संयुक्त अरब अमीरात की सलाहकार कंपनी 'अल जवाडा ट्रेड एंड सर्विसेज' के डायरेक्टर नासिर अली शहबान



अली का नाम आया था। ओसीसीआरपी रिपोर्ट के अनुसार यह अली खाड़ी स्थित कंपनी 'गल्फ अरिज़ ट्रेडिंग एफजेडई (यूईई)' नाम की कंपनी का मालिक है, जो मारीशस स्थित कंपनी 'मिड इस्ट ओसियन ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट' कंपनी के मुनाफे को हथियाने वालों में प्रमुख हिस्सेदार है।

‘गल्फ एशिया ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट (ब्रिटिश बर्जिन आईलैंड्स)’ को निर्यातित करने वाली कंपनी भी उसी की है। ये सारी कंपनियां आपसी तालमेल द्वारा विशालकाय धन को देश से बाहर ले जाकर विभिन्न ठिकानों पर घमा-फिराकर देश में वापस लाती रही हैं, और इस कलाबाजी का अंजाम अडानी समूह की कंपनियों के शयरों द्वारा धन-वर्षा में हुआ, जिससे अडानी दुनिया के लटेरों की लिस्ट में दूसरे नंबर पर पहुंच गया। क्रार्टज पत्रिका की रिपोर्ट के मुताबिक यह अली दुबई में ‘अडानी वाला अली’ नाम से मशहूर है। जिसने 2009 में भी एक कंपनी बनाई थी, जिसे उसने विनोद अडानी को बेच दिया। फजीवाड़े की इन कंपनियों की खुदाई में और गहरा जाएंगे तो सर चक्रानने ले रहे गए!!

नासिर अली शहबान अली, अरब का मुसलमान है। अडानी की ठगी का एक अहम और पुराना घटयंत्रकारी है। मेवात में उत्पात करने वाले विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल को इससे कोई आपत्ति नहीं। हिन्दू-मुस्लिम एकता द्वारा ठगी हो रही हो, लाखों करोड़ की कर चोरी का फर्जीवाड़ा हो रहा हो, तो भगवा ब्रिगेट को कोई आपत्ति नहीं!! बस मेहनतकश हिन्दू-मुस्लिम एक नहीं होने चाहिए!! देश के किसान-मजदूर जब हिन्दू-मुस्लिम में बंटने से इनकार करते हैं, तब ही इस भगवे कुनबे के पेट में हौल क्यों होने लगती है?

चांग चुंग लिंग: अडानी के इस घोटालेबाज साझेदार की प्रोफाइल तो और भी धांसू है!! अडानी और लिंग की यारी और भी पुरानी है। उसका पहला परिचय है कि वह 'गुदामी इंटरनेशनल' का डायरेक्टर था। अडानी द्वारा, 2002 में रजिस्ट्रर ऑफ कम्पनीज में दायर रिटर्न के अनुसार, गुदामी इंटरनेशनल, अडानी इंटरप्राइजेज की सहायक कंपनी है। मतलब साफ़ है, अडानी नाम का अपना गुजराती भाई सच में वसुधैव कुटम्बकम में विश्वास करने वाला महापुरुष है!! अगुस्टा वेस्टलैंड नाम के महर्णे हेलिकॉप्टर ख़ेरीदी में भी एक भारी घोटाला हो चुका है। उस प्रॉडॉमें 2018 में जिन कंपनियों के लिस होने का पता चला था उनमें अडानी-लिंग वाली यह कंपनी गुदामी इंटरनेशनल भी थी। गुदामी इंटरनेशनल ने 'मोटोरेसो इन्वेस्टमेंट होलिङ्डं'

नाम की एक विशालकाय निवेश कंपनी में भी विशालकाय निवेश किया हुआ है और इन दोनों कंपनियों ने मिलकर 'टीम भावना'

के तहत अडानी की अनेक कंपनियों में कुल 4.5 बिलियन डॉलर का निवेश किया हुआ है!! लिंग साहब ने 'ग्रोमो-टेट एंड इवेस्टमेंट' में भी भारी निवेश किया हुआ था। वे दरअसल जो भी करते हैं, भारी ही करते हैं!! यह कंपनी 2011 में अडानी पॉवर नाम के महासागर में समा गई और समाने की इस प्रक्रिया में अडानी-लिंग जोड़ी को फ़कृत 423 मिलियन डॉलर का मुनाफ़ा हुआ। अडानी और लिंग, दोनों भाई जिसे भी छू लेते हैं सोना हो जाता है!! पता नहीं क्या रहस्य है कि असंख्य कंपनियों में जहां मुनाफे की दर लगातार गिरती जा रही है अडानी-लिंग की कंपनियों में मुनाफ़ा हमेशा छप्पर-फाड़ ही होता है!! चांग चुंग लिंग का बेटा चांग चिंग टिंग, बाप से भी ज्यादा होनहार है!! बेटे की कम्पनी 'पीएमसी प्रोजेक्ट्स' और अडानी की कंपनियों में भारी लेनदेन चलता रहता है। टिंग, अडानी की ओर से इंटरनेशनल कॉर्नफैस भी भागीदारी भी करता है। सेबी ने जो रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की है उसमें कहा है कि उसने लिंग के बेटे टिंग की कंपनियों की छानबीन भी की है, लेकिन छानबीन में छनकर क्या बाहर निकला इसका खुलासा नहीं किया। इसका मतलब टिंग भी लिंग की तरह पाक साफ़ ही पाया गया होगा!! अडानी-लिंग-चिंग की यारी इतनी गाढ़ी है कि तीनों सिंगापूर में एक ही घर में निवास करते हैं!!

‘फासीवादी सत्ता भयानक लेकिन
अस्थिर होती है’

अडानी को जब भी चोट पहुंचती है, अडानी से ज्यादा दर्द भाजपा और व्यक्तिगत रूप से मोदी को होता है। 'हिंडेनबर्ग रिपोर्ट', 24 जनवरी को प्रकाशित हुई थी। 'ये देश पराहमला है', अडानी से भी ज्यादा शोर भाजपाईवों ने मचाया था। इतने बड़े घोटाले के उजागर होने पर भी, अडानी को ढबने से बचा लिया गया। 31 अगस्त को आई 'ओसीसीआरपी' रिपोर्ट ठोस दस्तावेजी सबकूतों के साथ आई है। जिस दिन इस रिपोर्ट से तहलका मचना था, उसी दिन, 'एक देश एक चुनाव' का जुमला उछलकर, दरबारी मैटियार के गले का पट्टा खोल दिया गया। रिपोर्ट पराचर्चा पीछे धिक्कल गई। जैसे जनवरी महीने में जांच के आदेश हुए थे, वैसे ही इस बार भी जांच के आदेश हो जाएंगे। जब इंडी जैसी जांच एजेंसियां अडानी के विरुद्ध कुछ नहीं कर रहीं, तो सेबी जैसी निराह संस्था क्या जांच करेंगी। संसद में हल्का मचेगा, उसकी भी फायदा सत्ताधारी दल उठाएगा, जैसे पहले जेपीसी की मांग के दौरान उठाया था।

अधिकतर दिन संसद नहीं चलेगी और आखिरी दो घंटे में सारे प्रस्तावित काले कानून पास करा लिए जाएंगे।

ये हैं, आज सत्ता का असली स्वरूप। मेहनतकश किसान-मजदूर वर्ग की तो जाने दीजिए। उनकी ये क्यों चिंता करेंगे लेकिन क्या ये सत्ता आज पूँजीपति वर्ग के औसत हित की चिंता कर रही है? शासक वर्ग ने अपनी सत्ता को सुचारू रूप से चलाने के लिए जो नियम कानून बनाए हैं क्या उन्हीं को पैरों तले नहीं कुचला जा रहा? 'खेल' के कानून तोड़ने वाले सरमाएदार को दंडित करना और सभी सरमाएदारों को अपने व्यवसाय करने के लिए समान धरातल मुहैय्या कराना, मौजूदा सत्ता की जिम्मेदारी है। यह मजदूर वर्ग के हित में नहीं, बल्कि मालिक वर्ग के हित में है। क्या उसका कोई सम्मान हो रहा है? उत्तर है नहीं। इस बिन्दु की ओर गहन विवेचना की जाए तो निष्कर्ष निकलेगा कि 'खेल' के अपने बनाए नियमों-कानूनों का पालन नहीं हो रहा, मतलब सत्ता खुद को कमज़ोर करती जा रही है, अस्थिर करती जा रही है। पूरे का पूरा तंत्र जिन चार खम्भों पर स्थिर खड़ा था वे खोखले होते जा रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के नेता, जेओर्जी दिमित्रोव ने बिलाकुल सही कहा था, 'फासीवादी सत्ता भयानक लेकिन अस्थिर (ferocious but unstable) होती है।' फासीवादी सत्ता बुर्जुआ मापदंड से भी हर रोज कर्दे ना कर्दे अपराध कर रही होती है। इसीलिए उसे सबाल नहीं चाहिएं, बोलने की आजादी देना मंजूर नहीं, अधिक से अधिक दमनकारी काले कानून चाहिएं। हर रोज नया झांसा चाहिए।

इस प्रक्रिया के साथ ही लेकिन एक और काम हो रहा है। सत्ता का असली कुरुरूप चेहरा लोगों को स्पष्ट नजर आ चुका है। जिस बात को लोग सुनने के तैयार नहीं होते थे उसी बात को अब वे दूसरों को समझा रहे होते हैं। भगवा ब्रिगेड जौ दिवाली से पहले चीनी झालर का बहिष्कार कर चीन को सबक सिखाने का पार्खेंड रचती है उसे लिंग और टिंग के साथ मिलकर अडानी की लट से कोई तकलीफ नहीं!! ग्रीब पशुपालकों को हिंदुत्व के लिए खतरा बताकर उनपर गिर्दों की तरह टूट पड़ने वाले हिंदुत्व के शूरवीरों को अरबी नासिर अली शहबान अली की ठगी से कोई समस्या नहीं!! क्या किसी ने संघ परिवार के किसी अंग द्वारा अडानी के विरोध में कोई शब्द सुना? किसे दोष दें? इतने ठोस सबूत मिलने, मोदी और अडानी, दोनों के रंगे हाथों पकड़े जाने, नंगई उजागर हो जाने के बाद भी, हम कुछ नहीं कर पाए, सारी दिनिया हैरान है!!